ग्रीन रिवोल्ट

हरित-नीरा रहे वसुंधरा

पेजः 4

अखबार पहुंचाने के लिए रोजाना 60 कि मी साइकिल चलाते हैं जागिन दा

रविवारीय, 29दिसं 2019-04 जन. 2020 वर्ष- एक, अंक-21, रांची. कुल पृष्ठ 4 हिन्दी साप्ताहिक R.N.I. No. JHAHIN/2019/78094 www.greenrevolt.news मूल्य 5 रूपये

ग्रीन रिवोल्ट परिवार की ओर से आप सभी पाठकों को नववर्ष की असीम शुभकामनायें

जोन्हा में रेलवे कर्मचारियों का स्वास्थ्य चेक अप

रांची : दक्षिण पूर्व रेलवे राँची मंडल प्रतिवर्ष रेल कर्मचारियों का स्वास्थ्य चेक अप किया जाता है दूर दराज़ के स्टेशनो पर कार्यरत रेल कर्मचारियों के लिये राँची स्थित मंडल अस्पताल मे आ कर स्वास्थ्य चेक अप करवाना संभव नहीं हो पाता है। इसलिये मंडल अस्पताल से ऐसे स्टेशनों पर जा कर डॉक्टर उनका स्वास्थ्य चेक अप करते है। दिनांक 31-12-19 को अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक राँची के संजीव कुमार ने जोन्हा मे कार्यरत कुल 37 रेलवे कर्मचारियों का स्टेशन पर स्वास्थ्य चेक अप किया ।

रांची मोराबादी मैदान में हेमंत सोरेन ने ली मुख्यमंत्री पद की शपथ, राज्य को हेमंत से बहुत उम्मीदें

हेमंत ऋतु में हेमंत का राज्यारोहण

मुख्य संवाददाता

रांची : 29दिसंबर को जाड़े के अलसायी सी दुपहरिया में रांची का मोराबादी मैदान बिल्कुल अलसाया नहीं था। यहां दस हजार की भीड़ एक एतिहासिक पल का गवाह बनी। झारखंड जैसे छोटे राज्य में एक बड़ा सत्ता परिवर्तन हुआ। हेमंत ऋतु जिसे शरद ऋतु भी कहते हैं में झारखंड के युवा मुख्यमंत्री हेमंत ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। उनका राज्यारोहण इस मायने में भी एतिहासिक है कि उनके नेतृत्व वाली महागठबंधन को इतने जनसमर्थन की उम्मीद चुनावी पंडितों ने भी नहीं की थी। शायद हेमंत सोरेन भी इतने अप्रत्याशित जनसमर्थन की उम्मीद नहीं लगाये थे। इसी कारण से मिली इस बड़ी जीत से उनकी आंखें भी भावुकता में डबडबा गयी।

मुख्यमंत्री के साथ ही महागठबंधन के भी तीन विधायकों डॉ. रामेश्वर उरांव, आलमगीर आलम और सत्यानंद भोक्ता ने भी मंत्री पद की शपथ ली। शपथ लेने के साथ ही हेमंत सोरेन के सामने राज्य को पटरी पर लाने की चुनौतियां भी हैं। इसके साथ ही गठबंधन के सभी दलों , नेताओं को साध कर चलना भी एक बड़ी चुनौती होगी। इन सबके बाद भी हेमंत सोरेन आश्वस्त और आतविश्वास से भरे से लग रहे हैं। इस बार जनता की उम्मीदें और आकांक्षायें झारखंड को लेकर बहुत ज्यादा है।

झारखंड को पटरी पर लाना बड़ी चुनौती

मुख्यमंत्री पर की शपथ के बाद सबसे पहली खबर यही आयी कि राज्य का खजाना खाली है। सैलरी देने के लिये भी पूर्ववर्ती सरकार लोन ले रही थी। हालांकि इस बीच प्रधानमंत्री ने हेमंत सोरेन को बधाई देकर यह बयान दिया कि, झारखंड के विकास के लिये वह पूरा सहयोग करेंगे। राज्य में रोजगार की स्थिति दुरूस्त करना, पलायन रोकना, गांवों और किसानों की समस्या के साथ ही शहरी मध्यवर्ग की बड़ी आबादी की जरूरतों पर भी ध्यान देना। ये सब झारखंड में किसी भी सरकार के लिये बड़ी चुनौती है।

किताबों की बिक्री बढी

जीत के बाद हेमंत सोरेन को पुष्पगुच्छ और बुके देने वालों की बाढ सी आ गयी। इसे देख कर मुख्यमंत्री ने कहा कि पुष्पगुच्छों को देने के बजाय अगर मुझसे मिलने वाले सभी लोग किताब दें तो वह बहुत काम आयेगा। उसे लायब्रेरी में रखा जाये तो लायब्रेरी भी बहुत समृद्ध हेागा। मुख्यमंत्री के इस संदेश को सुन कर एकाएक किताबों की बिक्री बढ गयी और मिलने वालों के हाथों में गुलदस्ते की जगह पुस्तक दिखने लगे। मुख्यमंत्री आवास के इर्द गिर्द भी कुछ लोगों ने किताबें बेचनी शुरू कर दी। दूकानों में झारखंडी साहित्य के किताबों की बिक्री भी बढ गयी है।

किसी मिलने वाले को मायूस नहीं कर रहे हेमंत

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन दुसरी बार मुख्यमंत्री बने हैं। लेकिन इस बार जनसमर्थन देख कर वो भावुक भी हैं। महागठबंधन के जीत के दिन भी जनता का समर्थन देख कर उनकी आंखें डबडबा गयी थीं। और कुछ मीडियाकर्मियों ने उनकी यह तस्वीर भी उतार ली थी। जीत के बाद से ही उनसे मिलने वालों का तांता लगा हुआ है। उनके आवास पर हमेंशा एक अच्छी खासी भीड़ बधाई देने वालों की लगी रहती है। हालांकि हेमंत सोरेन ने अपने गठबंधन की जीत के बाद अच्छा खासा समय देकर सभी मिलने वालों से अपने आवास पर मुलाकात की थी और सबों की बधाई भी स्वीकार की। गर्मजोशी से युवाओं से मिले और उनके साथ सेल्फि भी खिंचवाई। यही कारण है कि, सोशल मीडिया में भी बहुत सारे यूजर्स मुख्यमंत्री के साथ अपनी सेल्फि पोस्ट कर रहे हैं।

इतने लोगों और मीडिया से मिलने के बाद भी हेमंत सोरेन बहुत ही सौम्य ता से सबों से मिल रहे हैं। यहां तक कि रात के नौ दस बजे भी किसी मिलने आने वाले को वह मायूस नहीं कर रहे।

सांसद संजय सेठ का दिखा मानवीय चेहरा

रांची सांसद संजय सेठ का यह कार्य सराहनीय है। दरअसल ठंड के इस मौसम में जरूरतमंदों के बीच कंबल तो कई लोग बांटते हैं लेकिन संजय सेठ चादर बांट रहे हैं। यह चादर वह शॉल है जो उन्हें सम्मान के तौर पर कई जगह मिलते हैं। संजय सेठ बताते हैं कि सम्मान में मिले चादर का इससे अच्छा और सम्मान कुछ नहीं हो सकता कि वह जरूरतमंदों के काम आ रहा है। मुझे लगता है यह सही भी है क्योंकि मुझे याद है एक बार रांची में सीबीआई ने जब एक अधिकारी को घुस लेते पकड़ा था और उसके घर की तलाशी शुरू की थी तो उसके घर के एक कमरे से सिर्फ सम्मान के शॉल भरे हुए मिले थे। सम्मान के शॉल ऐसे रखकर बर्बाद करने से बेहतर है जरूरतमंदों के बीच बांटा जाए।

सम्मान में मिले चादरों से ठिठुरते गरीबों को दी राहत

सीएमडी सीसीएल ''डॉ. आम्बेडकर एक्सलेंसी सर्विस नेशनल अवार्ड - 2019'' से सम्मानित

भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा 8-9 दिसम्बर को दिल्ली में आयोजित ''35वां राष्ट्रीय सम्मेलन'' में सीसीएल के सीएमडी गोपाल सिंह को ''डॉ. आम्बेडकर एक्सलेंसी सर्विस नेशनल अवार्ड - 2019'' से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय सचिव श्री अनिल बानफोर, आम्बेडकर स्कूल ऑफ मार्शल आर्ट के निदेशक तकनीकी श्री महेन्द्र प्रताप एवं श्री रवि बानफोर ने संस्थान की ओर से श्री सिंह को उनके दरभंगा हाउस स्थित कार्यालय में प्रदान किया।

परिमल नथवाणी के आदर्श ग्राम पचांयत बरवादाग में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर

धीरूभाई अम्बानी के जन्म जयंती पर निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर

रांची : 28, दिसम्बर 2019 - स्व.धीरूभाई अबांनी की जन्म जयंती पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। राज्य सभा सांसद परिमल नथवाणी द्वारा चयनित आदर्श ग्राम पचांयत बरवादाग के ग्राम सीताडीह के सभा घर में सुबह के 11 बजे से शाम तीन बजे तक स्वास्थ्य शिविर लगाया गया। डॉ.आर.पी.चौधरी एवं अनगड़ा प्रखण्ड अस्पताल से आए हुए चिकित्सीय दल- शशी ठाकुर, मलेरिया रोग विशेषज्ञ, मेरी लुईस मिंज , ए.एन.एम., सुन्धाशु झा, समुर स्पेशलिस्ट व सहयोगी जयराम सिंह की भूमिका सराहनीय रही। काफी सख्या में ग्रामीणों ने भी बढ-चढकर भाग लेकर चिकित्सकीय परामर्श का लाभ उठाया। डॉक्टरों द्वारा यह बताया गया कि लगातार कैम्प के जरिए हीं इनके स्वास्थ्य में सुधार लाया जा सकता है । ग्रामीणों के बीच जागरूकता की काफी कमी है अतः निरन्तर प्रयास किया जाना चाहिए ताकि ग्रामीण स्वास्थ्य स्तर अच्छा बना रहे।

डॉ.रामेश्वर उरांव:निर्माण के लिये जितने पेड़ कटेंगे हम उससे दुगूने लगायेंगे

संवाददाता

रांची : महागठबंधन की सरकार में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के साथ मंत्री पद की शपथ लेने वाले कांग्रेस के कद्दावर नेता और प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रामेश्वर उरांव ने ग्रीन रिवोल्ट से बातचीत में कहा कि राज्य में वन एवं पर्यावरण विभाग है जो वनों के संरक्षण के अलावा पर्यावरण संरक्षण का भी काम करता है। ऐसे में झारखंड में वन एवं पर्यावरण संरक्षण का काम सुचारू रूप से होगा। झारखंड वन संपदा से परिपूर्ण राज्य है और यहां हम विकास और निर्माण के लिये जितने पेड़ काटेंगे उससे दुगुने पेड़ अवश्य लगायेंगे।

ज्ञात हो कि, झारखंड में वन भूमि का प्रतिशत बढा है और राज्य के 32 प्रतिशत भूमि पर वनों का विस्तार है।

एक तथ्य यह भी

- बरही तक सड़क निर्माण में हजारो पेड़ों को शिफ्ट करना था लेकिन आरोपी है कि ऐसा नहीं हुआ।
- रांची टाटा मार्ग निर्माण में हजारो पेड़ कटे , लकड़ियां गायब कर दी गयीं।
- मंडल डैम के निर्माण में भी हजारो पेड़ कटेंगे।

मैं बुद्ध से बहुत ज्यादा प्रभवित हूं

डॉ. रामेश्वर उरांव ने प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बनने पर कहा था कि जबतक कांग्रेस को सत्ता नहीं दिलवाउंगा तक तक फूल माला नहीं पहनुंगा। आज कांग्रेस गठबंधन सत्ता में है। फिर भी मैं फूल माला पहनना पसंद नहीं करता। गौतम बुद्ध ने कहा था कि सम्मान में पहनाया जाने वाला माला भी तो फूलों को उनके पौधे से तोड़ कर हत्या कर के ही बनाया जाता है। इसलिये ये कोई सही चीज नहीं। बुद्ध के इस सोंच से मैं बहुत प्रभावित हूं और फूल माला में विश्वास ज्यादा नहीं करता।

कांके विधानसभा क्षेत्र के तमाम किसानों, व्यवसायियों, युवाओं, भाइयों एवं बहनों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें एवं बच्चों को शुभ प्यार। आप सबों के स्नेह एवं समर्थन का मैं आजीवन आभारी रहुंगा। नये साल पर मेरी आप सबों के लिये ईश्वर से यह कामना है कि क्षेत्र के किसान समृद्धी की ओर, युवा रचनात्मक कार्यों की ओर अग्रसर हों। मैं सदैव आप सबों के सुख दुख में साथ रहुंगा। आप सबों का

समरी लाल

भाजपा विधायक, कांके विधानसभा क्षेत्र

कुल वन क्षेत्र बढ़ा, लेकिन सामान्य घना वन क्षेत्र घटा

केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर द्वारा जारी फॉरेस्ट रिपोर्ट में कहा गया है कि देश में कुल वन क्षेत्र बढ़ा है, लेकिन पूर्वोत्तर राज्यों के लिए यह रिपोर्ट अच्छी नहीं है।देश में जंगल का कुल क्षेत्र (फोरेस्ट कवर) बेशक बढ़ गया है, लेकिन जहां मध्यम दर्जे का सघन वन क्षेत्र घटना और पूर्वोत्तर राज्यों में जंगलों का कम होना कोई अच्छे संकेत नहीं हैं। 30 दिसंबर 2019 को केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने स्टेट ऑफ इंडिया फोरेस्ट रिपोर्ट 2019 जारी की। इसके अनुसार, देश का कुल वन आवरण (फोरेस्ट कवर) 7,12,249 वर्ग किमी है, जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 21.67 प्रतिशत है। इससे एक दशक पहले 2011 में कुल वन क्षेत्र 6,92,027 वर्ग किमी था। एक दशक में देश का कुल वन कवर 20,222 वर्ग किलोमीटर (3 प्रतिशत) बढ़ा है। सबसे अधिक खुले वन क्षेत्र (ओपन फॉरेस्ट) में वृद्धि हुई है, लेकिन सामान्य घने वन क्षेत्र में 3.8 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है।देश ने अपने भौगोलिक क्षेत्र का 33 प्रतिशत वन क्षेत्र का लक्ष्य रखा है, लेकिन 2019 में यह कुल भौगोलिक क्षेत्र का 21.67 प्रतिशत वन क्षेत्र कवर है, जो 2017 में 21.54 प्रतिशत था।इस दशक में सबसे अधिक खुले वन क्षेत्र में वृद्धि हुई है, जिसमें कमर्शियल वृक्षारोपण भी शामिल है। लेकिन जिस तरह सामान्य घने वन कम हो रहे हैं, उससे लगता है कि इन घने वनों की कीमत पर कमर्शियल वृक्षारोषण हो रहा है।

एजेंसियां: भारत के वन राज्य रिपोर्ट (ISFR) के 2019 के संस्करण के अनुसार देश के वन क्षेत्र में 3,976 वर्ग किलोमीटर (वर्ग किमी) की वृद्धि हुई, लेकिन पूर्वोत्तर राज्यों अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर और मिजोरम में सबसे ज्यादा गिरावट आई। 712,249 वर्ग किमी में, वन आवरण देश के भौगोलिक क्षेत्र का 21.67% या पिछले वर्ष से 0.12% अधिक है। क्राफ़ एक द्विवार्षिक तौर पर जंगल और पेड़ के कवर, बांस संसाधनों, कार्बन स्टॉक और जंगल की आग का आकलन करता है।

वन आवरण में वृद्धि दिखाने वाले शीर्ष तीन राज्य कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और केरल हैं।

ट्री कवर, 1 हेक्टेयर से कम पेड़ों के पैच के रूप में बताया जाता है इसके अनुसार दर्ज वन क्षेत्र में 1, 212 वर्ग किमी की वृद्धि हुई है। इस रिपोर्ट के अनुसार पेड़ और वनाच्छादित क्षेत्र भारत के 25.56% भूमि पर माना गया है। पिछली बार यह प्रतिशत का था। 24.39% था।

पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि पूर्वोत्तर में गिरावट "चिंता का विषय नहीं है। राज्यों में अधिकांश राज्यों की तुलना में जंगल का अनुपात बहुत अधिक था- मिजोरम (85.4%), अरुणाचल प्रदेश (79.63%) और नागालैंड (75) %) - और जंगल में गिरावट अभी भी कम थी। केंद्र के पास दीर्घावधि में इसे ठिक करने की नीतियां हैं।

हालाँकि, रिपोर्ट से पता चलता है कि इस जंगल की गुणवत्ता - वनों के पेड़ों के घनत्व के मामले में, जिसमें सघन वन पैच शामिल हैं - वो अभी पर्याप्त नहीं हैं। जबकि 'मध्यम सघन वन' (एमडीएफ) के प्रकार में 1,755 वर्ग किमी का एक 'बहुत बड़ा हिस्सा तैयार हो गया है, 2782 वर्ग किमी कम गुणवत्ता वाले खुले जंगल (ओएफ),' स्क्रब वन 'या' नॉन फॉरेस्ट 'में आ गया है। VDF, जो वनस्पतियों का प्रतिनिधित्व करता है और 2017 के आकलन पर 1,120 वर्ग किमी की वृद्धि के साथ 70% से ऊपर के क्षेत्र में इसका घनत्व बढा है।

रिकॉर्डेड फ़ॉरेस्ट एरिया के भीतर का फ़ॉरेस्ट, या जिसे आधिकारिक तौर पर राज्यों या केंद्र द्वारा वन के रूप में वर्गीकृत किया गया है,उसमें 330 वर्ग किमी की कमी दिखाई गयी है, लेकिन ऐसे रिकॉर्ड किए गए क्षेत्र के बाहर' फ़ॉरेस्ट 'में 4,306 वर्ग किमी की वृद्धि हुई है। जंगल के बाहर के पेड़ में लगभग 29.38 मिलियन हेक्टेयर शामिल था, जो देश में कुल पेड़ और वन कवर का 36.4% था। महाराष्ट्र में जंगल के बाहर इस तरह के पेड़ की सबसे बड़ा क्षेत्र दर्ज किया गया। देश का वृक्ष और वन आवरण काफी हद तक 21.2% के आस पास रहा है । पर्यावरणविदों की माने तो एक देश की कूल भूमि का 35 प्रतिशत वनों से ढका होना आदर्श स्थिति बनाता है। इस हिसाब से गुजरात और महाराष्ट्र ने सबसे ज्यादा सुधार दर्ज करते हुए, पिछले मूल्यांकन से मैंग्रोव कवर में 54 वर्ग किमी या लगभग 1% की वृद्धि प्राप्त की है। 2017 के अनुमान की तुलना में बांस का कुल क्षेत्रफल 160, 037 वर्ग किमी में 3,229 वर्ग किमी और बढ़ा है। देश के कुल कार्बन स्टॉक का अनुमान 7124 मिलियन टन था, जो कि पिछले आकलन से 42.6 मिलियन टन की वृद्धि हुयी है। ●

नववर्ष की शुभकामनाओं केसाथ

श्री साईं अलुमिनियम एंड फैब्रिकेशन

कटहल मोड़ राँची, नजदीक डी ए वी, हेहल

अलुमिनियम विन्डो एवं स्टील वर्क

BOOK INDIA

DEALS IN SCHOOL BOOKS & STATIONARY

BRANDED BOOK REASONABLE PRICE LEADING PUBLISHERS

- Top High Quality Books
- C.B.S.E., NCERT,ICSE & JAC Board
- 365 Days Services

SPECIALIST IN Pvt. School Books/Play School Books/Childrens Books

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप पुस्तकें उपलब्ध

Sahay Compound, St. Anne's Girls School Lane, Tharpakhna, Ranchi Ph. : 9199365691,7050112727,0651-6522703

पर्यावरणीय त्रासदियों का साल रहा 2010

वर्ष 2019 बीत गया। ऐसा हर साल के साथ होता है कि अंत में हम सफलताओं असफलताओं का लेखा जोखा देखते हैं। साल 2019 विश्व को कई प्राकृतिक आपदाओं और पर्यावरण नुकसान का घाव दे गया। अमेजन के जंगलों में लगी आग से सारा विश्व परेशान हुआ, लेकिन उससे भी ज्यादा दुखद बात रही कि ब्राजील की सरकार ने इस भयंकर त्रासदी से निबटने के बजाय उसपर राजनीति की। यूरोपीय यूनियन से लेकर दुनिया भर के देशों के आग बुझाने के प्रस्ताव को ब्राजीली सरकार ने नकार दिया और अमेजन कितने ही दिनों तक धधकते रहा। दुनिया का फेफड़ा कहे जाने वाले अमेजन का ये हश्र मानव जाति के लिये शर्म की बात रही। अमेजन के जंगलों की आग इतनी भयंकर थी कि उपग्रहों से भी यह धधकते हुये दिखता था।

भारत के लिये भी साल 2019 शर्मनाक रहा। हमारी राजधानी दिल्ली इतनी प्रदूषित है कि अब यहां सांस लेने में लोगों को दिक्कत हो रही है। भले हम विकसित होने का दावा करें, पर आम भारतवासी के लिये खास कर दिल्लीवासियों के लिये पर्यावरण कोई मुद्दा नहीं रहा। पैसे कमाने और भौतिक सुख की चाह में हमने दिल्ली को नर्क बना रखा है। दिल्ली में शुद्ध हवा बेचने के कैफे खुल गये हैं और दिल्ली में इंटरनेशनल खेल तक प्रदूषित हवा और धुंध के कारण रद्द हो रहे हैं। रही सही कसर पराली जलाने से पूरी हो चुकी है। दिल्लीवासियों को सूरज के दर्शन मुश्किल हो जा रहे हैं। लेकिन इतने शोर के बावजूद इसके परिष्कार और निदान के लिये कहीं कोई बेचैनी नहीं है। राजनीतिक दल एक दूसरे पर सिर्फ आरोप प्रत्यारोप लगाते रहे और दिल्ली सहित देश के कई महानगर प्रदूषण का शिकार बनते रहे। आज हालत ये है कि दुनिया के दस प्रदूषित शहरों की गिनती हो तो उसमें ज्यादतर भारत के ही होंगे। और उसपर भी दुखद ये कि बिहार जैसे राज्य की राजधानी पटना भी उसमें शामिल है। बिहार में कल कारखाने या उद्योग नहीं हैं फिर भी पटना का इतना प्रदूषित होना यह जताता है कि सबसे ज्यादा लापरवाह और प्रदूषण करने में आम जनता ही है। पटना में तो नालों में इतना कचड़ा जमा था कि तेज बारिश में शहर बाढ में डूब गया था। ये समस्या साल दर साल बढेगी ही। अब ये समय हमारे चेतने का है, प्रमाद का नहीं।

प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण से जुड़ी त्रासदियां अब आम हो गयी हैं। इससे वातावरण तो दूषित होता ही है साथ ही जान माल की भी भयंकर क्षति होती है। अभी हाल ही में आस्ट्रेलिया के जंगलों में आग लगने से आस्ट्रेलिया का दर्शनीय जानवर कोआला सैकड़ो की संख्या में जल मरे। हम इसी बत से अंदाजा लगा सकते हैं कि आस्ट्रेलिया जैसा विकसित देश भी इन त्रासदियों से निबटने में लाचार दिखा।

छठ जैसे महापर्व में दिल्ली के यमुना नदी में गंदगी से पैदा हुये सफेद झाग ने एक अलग ही नर्क का साक्षात दर्शन करवाया। ये सब देख हम बेचैन तो होते हैं, पर उसके बाद लापरवाह होकर खुद ही ऐसी त्रासदियों को पैदा करते हैं। आखिर इन सबका जिम्मेवार मानव ही तो है।

टीवी पर दिखाई जाएगी जलवायु परिवर्तन के प्रभाव की तस्वीर

एजेंसियां: मुंबई (आईएएनएस) इंडिया 2050 नामक एक वृत्तचित्र की पेशकश जल्द ही छोटे पर्दे पर की जाएगी, जिसमें जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण के गिरते स्तर के संभावित खतरों से दर्शकों को अवगत कराया जाएगा। इसका प्रसारण 29 दिसम्बर को डिस्कवरी चैनल पर होगा। कार्यक्रम में साल 2050 की कल्पना की गई है। इसकी शुरुआत जयपुर से होती है, इसमें इस वक्ततक जयपुर को रेत के ढेर के नीचे दबे दिखाया गया है। इसके बाद दिल्ली, चेन्नई, मुंबई और कोलकाता जैसे शहरों के भविष्य का भी वर्णन कुछ इसी तरह से किया गया है। इसमें बताया गया है कि यदि वक्तरहते हमने जलवायु परिवर्तन पर कुछ नहीं किया तो स्थिति इस कदर भयावह बन सकती है। दक्षिण एशिया में डिस्कवरी के विषय-सामग्री, तयात्मक और लाइफस्टाइल एंटरटेनमेंट के निदेशक साई अभिषेक ने इस बारे में कहा, इंडिया 2050 इस तय पर प्रकाश डालता है कि अगर हम नहीं बदले तो हमारा भविष्य क्या होने वाला है। यह हमें एक तरह से जगाता है और हर एक से अपील करता है कि इससे पहले कि बहुत देर हो जाए नींद से जागकर सब साथ में मिलकर इस दिशा में काम करें।

जहरीले रेडोन गैस की चपेट में भारत

डा. नितीश प्रियदर्शी

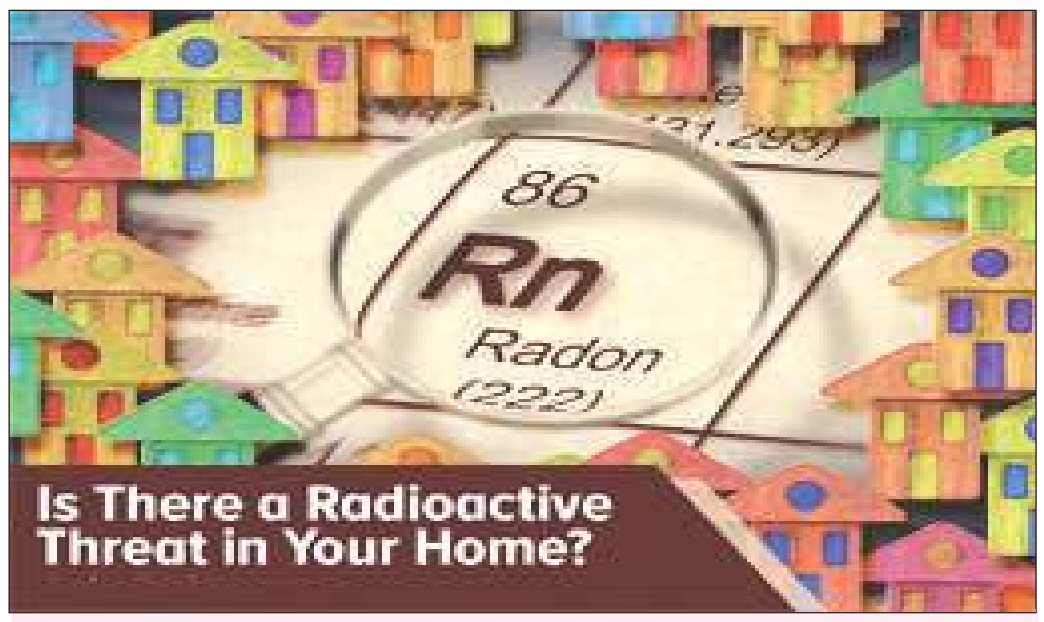

रेडोन एक जहरीला एवं रेडियोएक्टिव गैस है । इसके शरीर में पहुँचने से शरीर को नुकसान होता है । खासकर इसके अल्फा विकिरण से। जिस घर के भूमिगत जल में रेडोन की मात्रा मौजूद है वहां पर स्थिति और भी भयावह हो जाती है । एक तो जल से और दूसरा वही रेडोन जब जल के माध्यम से वातावरण में आ जाता है और जब शरीर में प्रवेश करता है तो शरीर को दुगुना नुकसान पहुँचाता है । रेडोन का देशव्यापी पाया जाना और फैलाव स्वास्थ्य के लिये एक गंभीर खतरा है।

भारत के कई जगहों के भूमिगत जल में रेडिओएक्टीव रेडोन गैस के पाए जाने की वैज्ञानिक पुष्टि हुई है भारत के बैंगलोर, मध्य प्रदेश के कि ओलारी- नैनपुर, पंजाब के भटिंडा एवं गुरदासपुर, उत्तराखंड का गढ़वाल, हिमाचल प्रदेश एवं दून घाटी के भूमिगत जल में रेडोन -222 के मिलने की वैज्ञानिक पुष्टि हुई है ।

बैंगलोर शहर के भूमिगत जल में रेडोन की मात्रा सहनशीलता की सीमा 11.83 इ०/ लीटर से ऊपर है । कहीं -कहीं ये सौ गुना अधिक है । यहाँ पर रेडोन की औसत मात्रा 55.96 इ०/ लीटर से 1189.30 इ०/लीटर तक पाई गई है कबैंगलोर शहर में भूमिगत जल की तुलना में सतही जल में कम रेडोन पाए गए क्योंकि वायुमंडल के संपर्क में रहने के कारण यह गैस जल से वायुमंडल में आसानी से घुल जाती है ।

बैंगलोर शहर के कैंसर रोगियों में से इस वक्त 10.5 फीसदी लोग लंग कैंसर और करीब 13.5 फीसदी लोग स्टोमक कैंसर से जूझ रहे हैं। जानकारों की मानें तो पानी में रेडोन की बढ़ती मात्रा का कारण जमीन में मौजूद ग्रेनाइट हैं।

मध्य प्रदेश के मांडला के किओलारी-नैनपुर जगह के भूमिगत जल में रेडोन के साथ युरेनियम की भी मात्रा पाई गई है । युरेनियम की औसत मात्रा 13 पि.पि.बी. (पार्ट्स पर बिलियन) से 4500 पि.पि.बी. तक पाई गई है । यहाँ के 13 गाँव में युरेनियम की मात्रा खतरनाक स्थिति को पार कर चुकी है । छह गाँवों में रेडोन की औसत मात्रा 34151 इ०3 से 12146,075 इ०/3 तक पाई गई है. इन सारे जगहों को काफी अधिक मात्रा के बैकग्राउंड रेडीऐशन वाला स्थान घोषित किया गया है ।

पंजाब के कई क्षेत्रों, विशेषकर मालवा इलाके में भूजल और पेयजल में यूरेनियम पाये जाने की पुष्टि हो गई है। इस खतरनाक ''भारी धातु'' (Heavy Metal) के कारण पंजाब में छोटे-छोटे बच्चों को दिमागी सिकुड़न और अन्य विभिन्न तरह की जानलेवा बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है। पंजाब के भटिंडा प्रदेश के भूमिगत जल में रेडोन की मात्रा पाई गई है । भटिंडा शहर में रेडोन की मात्रा गुरदासपुर शहर से कम है । भटिंडा के भूमिगत जल में रेडोन की मात्रा 3.4 इ०/लीटर से 3.8 इ०/लीटर है। एक अन्य शोध के अनुसार भटिण्डा जिले के 24 गाँवों में किये गये अध्ययन के मुताबिक कम से कम आठ गाँवों में पीने के पानी में यूरेनियम और रेडॉन की मात्रा 400 इ०/L के सुरक्षित स्तर से कई गुना अधिक है, इनमें संगत मंडी, मुल्तानिया, मुकन्द सिंह नगर, दान सिंहवाला, आबलू, मेहमा स्वाई, माल्की कल्याणी और भुन्दर शामिल हैं। 1999 से इस क्षेत्र में कैंसर के कारण हुई मौतों में बढ़ोतरी हुई है और तात्कालिक तौर पर इसका कारण यूरेनियम और रेडॉन ही लगता है। जिन गाँवों में कैंसर की वजह से अधिकतम और लगातार मौतें हो रही हैं, वहाँ के पानी के नमूनों में यूरेनियम नामक रेडियोएक्टिव पदार्थ की भारी मात्रा पाई गई है। हरियाणा के भिवानी जिले और साथ लगे हुए भटिण्डा जिले में स्थित तुसाम पहाड़ियों की रेडियोएक्टिव ग्रेनाईट चट्टानों के कारण इस क्षेत्र के भूजल में यूरेनियम और रेडॉन की अधिकता पाये जाने की सम्भावना भी जताई गई है।

फरीदकोट के 149 बच्चों के बालों के नमूनों में यूरेनियम सहित अन्य सभी हेवी मेटल, सुरक्षित मानकों से बहुत अधिक पाये गये हैं। यह निष्कर्ष जर्मनी की प्रख्यात लेबोरेटरी माइक्रोट्रेस मिनरल लैब द्वारा पंजाब के बच्चों के बालों के नमूनों के गहन परीक्षण के पश्चात सामने आया है। मस्तिष्क की विभिन्न गम्भीर बीमारियों से ग्रस्त लगभग 80% बच्चों के बालों में घातक रेडियोएक्टिव पदार्थ यूरेनियम की पुष्टि हुई है और इसका कारण भूजल और पेयजल में यूरेनियम का होना माना जा रहा है।

बाह्य हिमालय प्रदेश के दून घाटी में रेडोन की मात्रा अधिक पाई गई है. यहाँ पार रेडोन की मात्रा 25-92 इ०/लीटर है ।

हिमाचल प्रदेश के कुल्लू के कासोल प्रदेश प्रदेश में भी रेडोन के अधिक मात्रा में होने की सुचना है । यहाँ के भूमिगत जल में औसत युरेनियम की मात्रा 37.40 पि.पि.बी.है।

कर्नाटक के वराही एवं मार्कंडेय नदी प्रदेशों के भूमिगत जल में रेडोन की मात्रा पाई गई है ।

वायुमंडल की तुलना में भूमिगत जल में रेडोन की मात्रा अधिक होती है ।रेडोन-222, रेडियम - 226 के विघटन के फलस्वरूप बनता है। जिन चट्टानों में युरेनियम की मात्रा अधिक होगी वहां के भूमिगत जलों में रेडोन की मात्रा अधिक होगी । इन चट्टानों में प्रमुख हैं ग्रेनाइट, पेग्मैटाइट एवं दुसरे अम्लीय चट्टान । भारत में जहाँ पर भी रेडोन पाया गया है वहां पर इन चट्टानों की बहुलता है । रेडोन एक जहरीला एवं रेडियोएक्टिव गैस है । इसके शारीर में पहुँचने से शरीर को नुकसान होता है । खास-ाकर इसके अल्फा विकिरण से। जिस घर के भूमिगत जल में रेडोन की मात्रा मौजूद है वहां पर स्थिति और भी भयावह हो जाती है । एक तो जल से और दूसरा वही रेडोन जब जल के माध्यम से वातावरण में आ जाता है और जब शरीर में प्रवेश करता है तो शरीर को दुगुना नुकसान पहुँचाता है । ये हवा के साथ मिलकर फेफड़े और पानी के साथ मिलकर पेट पर बेहद बुरा असर डालते हैं।●

(लेखक देश के जाने माने जियोलॉजिस्ट एवं पर्यावरणविद हैं)

दुसरे देशों में जाने वालों में भारतीय अव्वल

दुनिया भर में बढ़ रही है प्रवासियों की संख्या, भारतीय सबसे अव्वल हैं। एक आंकड़े के अनुसार अपना देश छोड़ कर दूसरे देशों में जाने वालों में सबसे आगे हम भारतीय हैं। बेहतर जीवन और प्रचुर धन कमाने की लालसा में भारतीय अपने देश को छोड़ कर विदेशों में जाने से तनिक भी गुरेज नहीं करते। दुनिया भर में भारतीय प्रवासियों की संख्या 1.75 करोड़ है, जबकि दूसरे नंबर पर मैक्सिको है, जिसके प्रवासियों की संख्या 1.18 करोड़ है। तीसरे नंबर पर चीन है।भारतीयों के प्रवासी होने का एक बड़ा लाभ देश को रेमिटेंस मनी के रूप में प्राप्त होता है।जो 2018 में 5 लाख करोड था। रेमिटेंस मनी वो पैसे हैं जो प्रवासी भारतीय विदेशों से अपने देश भारत भेजते हैं। भारतीय इसमें भी नंबर एक पर काबिज हैं।

एजेंसियां

वर्ल्ड माइग्रेशन रिपोर्ट 2020 में कहा गया है कि हिंसक घटनाओं और प्राकृतिक आपदाओं के कारण लोग अपने घर छोड़ कर दूसरे स्थानों पर जा रहे हैं, दूसरे देशों में जाने वालों में भारतीय सबसे आगे हैं

दुनिया भर में प्रवासियों की संख्या बढ़ती जा रही है। 2019 में दुनिया की कुल आबादी में से लगभग 3.5 फीसदी यानी तकरीबन 27.2 करोड़ लोग प्रवासी रह रहे हैं। दिलचस्प बात यह है कि दुनिया में भारत का एक नंबर पर है, जहां के लोग दुनिया के दूसरे देशों में सबसे अधिक प्रवासी के तौर पर रह रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि प्राकृतिक आपदाओं की वजह से बहुत से लोग अपनी पैतृक स्थान छोड़कर जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन फॉर माइग्रेशन द्वारा 3 दिसंबर को जारी वर्ल्ड माइग्रेशन रिपोर्ट 2020 में यह बात कही गई है। रिपोर्ट के मुताबिक, दुनिया भर में भारतीय प्रवासियों की संख्या 1.75 करोड़ है, जबकि दूसरे नंबर पर मैक्सिको है, जिसके प्रवासियों की संख्या 1.18 करोड़ है। तीसरे नंबर पर चीन है, जिसके 1.07 करोड़ लोग दूसरे देशों में रह रहे हैं।

रिपोर्ट में कहा गया है कि किसी भी साल में देख लें, हर बार आपदाओं की वजह से नए लोग विस्थापित हो रहे हैं। इसमें संघर्ष और हिंसा प्रमुख कारण है, जबकि कई देशों में प्राकृतिक आपदा की वजह से विस्थापन हो रहा है।

अंतरिम विस्थापन निगरानी केंद्र (इंटरनल डिसप्लेसमेंट मॉनीटरिंग सेंटर, आईडीएमसी) ने पहली बार 2018 में आपदाओं की वजह से विस्थापित लोगों की संख्या एकत्र की है। साल 2018 के अंत तक आपदाओं की वजह से विस्थापित हुए लगभग 16 लाख लोग अभी भी राहत कैंपों या अपने घरों से दूर रह रहे हैं।रिपोर्ट में कहा गया है कि 2018 में भारत में सबसे अधिक 26.78 लाख लोग अतिशय मौसमी घटनाओं और आपदाओं के कारण विस्थापित हुए।

148 देशों में 2018 में 2.8 करोड़ देश के भीतर ही विस्थापित हुए, इसमें से 61 फीसदी केवल आपदाओं के कारण विस्थापित हुए। रिपोर्ट में बताया गया कि उच्च आय वर्ग वाले देशों से प्रवासी मजदूरों की संख्या घट रही है, जबकि उच्च मध्य आय वर्ग वाले देशों में प्रवासी मजदूरों की संख्या बढ़ी है। 2013 से 2017 के दौरान उच्च आय वर्ग वाले देशों प्रवासी मजदूरों की संख्या 11.23 करोड़ से घटकर 11.12 करोड़ रह गई है। जबकि उच्च मध्य आय वर्ग वाले देशों में प्रवासी मजदूरों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ी है। 2013 से 2017 के बीच यहां प्रवासी मजदूरों की आबादी 1.75 करोड़ से बढ़कर 3.05 करोड़ हो गई। रिपोर्ट बताती है कि अमेरिका प्रवासियों की पहली पसंद है। इसके बाद जर्मनी, सउदी अरब, रशिया फेडरेशन, ब्रिटेन, यूएई, फ्रांस, कनाडा और आस्ट्रेलिया का नंबर आता है।

चूंकि भारत ऐसा देश है, जहां से सबसे अधिक प्रवासी निकल कर दूसरे देशों में रहते हैं तो ये प्रवासी अपनी आमदनी का एक हिस्सा अपने देश भेजते हैं, जिसे रेमिटेंस कहा जाता है। इस मामले में भी भारत का नंबर अव्वल है। रिपोर्ट बताती है कि 2018 में अलग-अलग देशों में रह रहे भारतीय प्रवासियों ने भारत में 78.61 बिलियन डॉलर (लगभग 5 लाख करोड़ रुपए) भेजे। 2005 में रेमिटेंस पाने वाले देशों में भारत का नंबर तीसरा था और भारत में 22.13 बिलियन डॉलर रेमिटेंस के रूप में आया था। 2010 से भारत पहले स्थान पर बना हुआ है।●

सस्ती होगी जेरेनियम की खेती

जेरेनियम एक सुगंधित पौधा है जिसका तेल बेहद कीमती होता है। लखनऊ स्थित सीएसआईआर-केंद्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान (सीमैप) के वैज्ञानिकों ने पॉलीहाउस की सुरक्षात्मक शेड तकनीक विकसित की है, जिससे जेरेनियम उगाने की लागत कम हो गई है। इस पौधे की खेती किसानों के लिए अतिरिक्त आमदनी एक प्रमुख जरिया बन सकती है।आमतौर पर जेरेनियम की पौधे से पौध तैयार की जाती है। लेकिन, बारिश के दौरान पौध खराब हो जाती थी, जिसके कारण किसानों को पौध सामग्री काफी महंगी पड़ती थी। सीमैप के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित जेरेनियम की खेती की इस नई तकनीक से करीब 35 रुपये की लागत में तैयार होने वाला पौधा अब सिर्फ दो रुपये में तैयार किया जा सकेगा। इस परियोजना नेतृत्व कर रहे सीमैप के वैज्ञानिक डॉ. सौदान सिंह ने बताया कि ''जेरेनियम की पौध को अब तक वातानिकुलित ग्लास हाउस में संरक्षित किया जाता था, लेकिन अब पॉलीहाउस की सुरक्षात्मक शेड तकनीक विकसित हो जाने से किसान के खेत पर ही काफी सस्ती लागत में इसे तैयार कर सकते हैं। एक एकड़ खेती के लिए करीब चार हजार पौधों की जरूरत पड़ती है। इसके लिए 50-60 वर्ग मीटर का पॉलीहाउस बनाना होता है, जिसमें करीब 8-10 हजार रुपये का खर्च आता है। दोमट और बलुई दोमट मिट्टी में जेरेनियम की फसल बढ़िया होती है। इसकी खेती का सबसे उपयुक्त समय नवंबर महीने को माना जाता है।''

रबी फसल का रकबा बढा

2019 में जहां भारी बारिश से देश बाढ और दुर्घटनाओं से हलकान रहा वहीं इसके कुछ फायदे भी हुये हैं। ज्ञात हो कि 2019 में रिकार्ड बारिश हुयी है और मॉनसून का असर लंबे समय तक रहा। 2019 वर्ष में अत्यधिक बारिश की वजह से रबी फसलों को रकवे में बढ़ोतरी हुई है। केंद्रीय कृषि विभाग के मुताबित 20 दिसंबर तक 85 फीसदी रबी फसल की बुआई हो चुकी है। इस वर्ष 537.21 लाख हेक्टेयर में फसल लगा है जो कि पिछले वर्ष 504.69 लाख हेक्टेयर से अधिक है।

रातोंरात फसल बर्बाद कर देता है कड़ाके की ठंड और पाला

एजेंसियां: हवा में मिले हुए भाप के सूक्ष्म कण जो अधिक ठंड पड़ने पर सफेद तह के रूप में पेड़ पौधों पर जमने की वजह से गिरता है जिससे फसलों को पोषण पहुंचाने वाली सूक्ष्म नलियां फट जाती है

मध्यप्रदेश के देवास जिले के सिरोल्या गांव के किसान भवानीराम की फसल रातोंरात खराब हो गई। उन्होंने चार बीघा में आलू लगाया हुआ था। इसी तरह देवकरण की पांच बीघा में लगी चने की फसल खराब हो गई। वे जब शनिवार सुबह खेत पर पहुंचे तो पूरी फसल झुलसी हुई थी। फसल खराब होने की वजह अत्यधिक ठंड और उसकी वजह से गिरा पाला है। भवानीराम की तरह मध्यप्रदेश और कई और राज्यों के किसान गिरते पारे की वजह से फसल खराब होने आशंका से आतंकित हैं। मध्यप्रदेश के कई इलाकों में खेत में बर्फ की हल्की परत

जमने का भी मामला सामने आया है। देवास के किसान कैलाश यादव ने बताया कि खेत पर बर्फ की परत जम गई। बर्फ से आलू, चने की फसल को नुकसान का अंदेशा है।

अत्यधिक बारिश झेलने के बाद अब किसान की फसलों को ठंड का खतरा है। देशभर में बीते एक सप्ताह में मौसम में आए अचानक बदलाव ने किसानों की चिंता बढ़ा दी है। अचानक तापमान में आए गिरावट की वजह से रबी की फसलों पर पाला गिरना का अंदेशा गहरा गया है। मध्यप्रदेश में 28 दिसंबर को गुना, उमरिया, मंडला का न्यूनतम तापमान 3 डिग्री और पचमढ़ी का तापमान दो डिग्री सेल्सियस तक गिर गया। मध्यप्रदेश के आधे से अधिक जिलों का न्यूनतम तापमान 6 डिग्री सेल्सियस से कम है।

कृषि मौसम विज्ञानी एके भौमिक ने बताया कि अचानक तापमान में गिरावट किसानों के लिए चिंता की बात है। उन्होंने कहा कि अभी पाला गिरने के अधिक मामले सामने नहीं आए हैं लेकिन इसका खतरा लगातार बना हुआ है। हवा में मिले हुए भाप के सूक्ष्म कण जो अधिक ठंड पड़ने पर सफेद तह के रूप में पेड़झपौधों पर जमने की वजह से गिरता है जिससे फसलों को पोषण पहुंचाने वाली सूक्ष्म नलियां फट जाती है। भौमिक बताते हैं कि जैसे अत्यधिक ठंड में पानी की पाइपलाइन फटती है उसी तरह पौधों पर भी इसका असर होता है। वे बताते हैं कि चने, अरहर और पत्तेदार सब्जियों पर पाले का खतरा सबसे अधिक है। इससे बचने का उपाय बताते हुए वे कहते हैं कि इस वक्त फसलों की सिंचाई से मिट्टी का तापमान थोड़ा बढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा खेत से निकले खरपतवार को शाम के समय धीरे-धीरे जलाने से भी पाला से बचा जा सकता है। खेत के आसपास 5-6 जगह धुआं कर देने से तापमान में थोड़ी बढ़ातरी हो जाती है।

ठंड से हो रहे नुकसान का आंकलन करने के लिए सरकार की तरफ से अभी किसी सर्वे का आदेश नहीं हुआ है। किसान स्थानीय स्तर पर प्रशासन से मुआवजा की मांग कर रहे हैं।

ठंड का फायदा भी,घटेगा कीटनाशक का प्रयोग

ठंड में फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कीट खत्म हो जाता हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि इस वक्त कीटनाशक का प्रयोग न करें, क्योंकि इसकी जरूरत नहीं है। इसके अलावा ठंड से गेहूं की फसलों को फायदा होने की उम्मीद है। हालांकि, फसलों को इस वक्त पानी की जरूरत है।

आस्था जीवन का नि:शुल्क चिकित्सा जाँच एवं परामर्श शिविर

संवाददाता

रांची : 29.12.2019 को नि:शुल्क चिकित्सा जाँच एवं परामर्श शिविर पिस्का मोड़ स्थित रंगोली होटल, शिव शक्ति मेंडिकल हॉल के उपर नि:शुल्क चिकित्सा जॉच एवं परामर्श शिविर में 83 ब्लडप्रेसर एवं मधुमेह एवं 21 अन्य मरीजों की जॉच जाने माने प्रसिद्व चिकित्सक डा0 अमरेश कुमार, ने किया शिविर में चुनाभटा, मधुकम, देवी मण्डप रोड, पिस्कामोड़ शारदा बैट्री गली, बैंक कॉलोनी आदि जगहो से मरीजो ने आकर अपने बिमारियों की जॉच कराई। शिविर में ज्यादा मधुमेह, बुखार, पेटदर्द, एलर्जी, गैस्टिक आदि बिमारीयो के मरीज पाये गये। शिविर का शुभारंभ 10 बजे प्रातः हुआ।

शिविर को सफल बनाने में मुख्यरूप से संस्था के सचिव विनोद कुमार साहू, प्रवक्ता शिव किशोर शर्मा, सहित शीला साहु, सुमित कु0 साहु, ब्रजेश भारती, कृष्णा प्रसाद साहू, अंजना प्रियदर्शनी, संतोष सहाय, ओम प्रकाश महतो, विनय कुमार, रोहित गुप्ता, आनन्द कुमार बेदिया, पंकज सोनी, अजीत कुमार शर्मा, पूजा देवी आदि ने सराहनीय भुमिका निभाई।

सीसीएल ने 100 आश्रितों को नियुक्ति पत्र सोपा

सीसीएल ने 100 आश्रितों को नियुक्ति पत्र सोपा

सीसीएल दरभंगा हाउस परिसर स्थित विचारमंच हाल मे सीसीएल के विभिन्न छेत्रों मे 100 आश्रितों को नियुक्ति पत्र सोंपकर अपने सामाजिक उतरदायित्व का निर्वाह किया । सीसीएल के बरका झ्र सायल से 19 ,पिपरवार से 07, कथारा से 11, ढोरी से 09, गिरिडीह से 04, अरगड़ा से 06, कुजू से 13, बीएंडके से 06, एनके से 09, हजारीबाग से 11, रजरप्पा से 04, एव सीआरएस बरकाकाना से 01,कुल 100,लोगो को नियुक्ति पत्र सर्वा श्री उमेश सिंह,महाप्रबंधक (का. ओ. स.), अविनाश श्रीवास्तव, वरीय प्रबन्धक (का/ मेंनपावर),एम. एच. हक ,एसओ (पी), कुजू राजीव कुमार, एसओ (पी), गिरिडीह ने सोंपा।

सर्दी का रिकार्डतोड़ सितम

मुरलीधर

रांची : मौसम की ये मार अभी तो शुरू हुई है। ऐसा मौसम मकर संक्रांति तक रहता है। सर्द हवाएं, बर्फबारी, बारिश, इनसे होने वाली मुश्किलें और नुकसान कोई अब कोई नई बात नहीं रह गई हैं।

पूरा उत्तर भारत कड़ाके की ठंड से ठिठुर रहा है। सर्दी के पुराने रिकार्ड टूट रहे हैं और नए बन रहे हैं। राजधानी दिल्ली में इस बार दिसंबर की सर्दी ने एक सौ बारह साल का रिकार्ड तोड़ डाला। शनिवार को दिल्ली में अब तक का सबसे ठंडा दिन दर्ज किया गया। पहाड़ी इलाकों की बात करें तो कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड के ज्यादातर इलाकों में तापमान शून्य नीचे बना हुआ है। उत्तर–खंड के ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फीले तूफान की वजह से हालात ज्यादा गंभीर हैं। नदी–नाले जम गए हैं। मैदानी इलाकों में भी कई जगह पारा शून्य से नीचे है। राजस्थान के कई हिस्सों में तापमान शून्य के करीब पहुंच जाने से पानी जमने लगा है। उत्तर भारत के ज्यादातर मैदानी इलाकों का तापमान शिमला से भी कम हो गया है। इसी के साथ कोहरे की मार भी पड़ रही है। कई जगह घने कोहरे की वजह से सड़क हादसों में लोग मारे गए हैं। ये हालात बता रहे हैं कि चाहे पह–ड़ी क्षेत्र हों या मैदानी, कड़ाके की ठंड ने हर जगह लोगों का जीना मुश्किल कर दिया है। तेज ठंड में मरीजों खासतौर से बुजुर्गों और बच्चों की हालत बिगड़ती है और अस्पतालों में मरीजों की भीड़ बढ़ने लगती है। सर्दी से होने वाली मौतों के आंकड़े का तो सही–सही पता ही नहीं लगाया जा सकता। इन सबसे तो लगता है कि सर्दी का मौसम कहीं ज्यादा ही मुश्किलों भरा होता जा रहा है।

मौसम की ये मार अभी तो शुरू हुई है। ऐसा मौसम मकर संक्रांति तक रहता है। सर्द ह–वाएं, बर्फबारी, बारिश, इनसे होने वाली मुश्किलें और नुकसान कोई अब कोई नई बात नहीं रह गई हैं। नई बात यह है कि पिछले कुछ सालों में ठंड की अवधि और तीव्रता दोनों में बदलाव आया है। हर साल सर्दी किसी न किसी रूप में पिछले रिकार्ड को तोड़ रही है। कभी किसी दिन के अधिकतम या न्यूनतम तापमान को लेकर, तो कभी बर्फवारी के वक्त को लेकर। करीब तीन दशक पहले तक तो सर्दी की अवधि औसतन चार से पांच महीने रहती थी, लेकिन अब सर्दी कुछ दिन ही पड़ती है, लेकिन पहले की तुलना में कहीं ज्यादा मारक हो गई है। आमतौर पर दिसंबर का महीना भी कड़ाके की ठंड का अहसास नहीं कराता, अक्तूबर और नवंबर के महीने में तो पंखे चलते हैं। लेकिन इस बार दिसंबर के तापमान ने सदी का रिकार्ड तोड़ डाला। पहाड़ी क्षेत्रों में बर्फबारी का समय भी बदला है। दरअसल मौसम चक्र बदल रहा है, इसी से मौसम का मिजाज भी बदला है और इससे भारत ही नहीं, पूरी दुनिया प्रभावित हो रही है।

सवाल सर्दी के मौसम में होने वाली उन समस्याओं को लेकर है जिनका हम हर साल सामना करते हैं। लेकिन अगली बार वैसी मुश्किलों का सामना न करना पड़े, इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाते। इसी कड़ाके की ठंड में बड़ी संख्या में लोग सड़कों पर सोने को मजबूर हैं, जिन्हें सरकारी रैनबसेरों तक में जगह नहीं मिलती, खाना तो दूर। सर्दी जनित बीमारियां गरीब लोग इसलिए नहीं झेल पाते कि उनके पास अस्पताल जाने तक के भी पैसे नहीं होते। ऐसे में गरीब को सर्दी मारती है। दिल्ली जैसे दूसरे शहरों में ठंड इसलिए भी ज्यादा घातक साबित हो रही है क्योंकि ये शहर गंभीर प्रदूषण की मार झेल रहे हैं, इनकी हवा जहरीली हो चुकी है, लोग स–ांस नहीं ले पा रहे। ऐसे में सर्दी से बचाव के उपाय ज्यादा जरूरी हैं जो हम कर नहीं पाते।

सी.सी.एल. के निदेशक (कार्मिक) आर.एस. महापात्र का का भावभीनी विदाई

संवाददाता

रांची : सी.सी.एल. के निदेशक (कार्मिक) आर.एस. महापात्र को संध्या सी.सी.एल. परिवार की ओर से सीसीएल मुख्यालय के ''विचार मंच'' में ''सम्मान समारोह'' का आयोजन कर भावभीनी विदाई दी गई। सम्मान समारोह में सी.सी.एल. के निदेशक तकनीकी (संचालन) वी.के. श्रीवास्तव, निदेशक तकनीकी (योजना/परियोजना) भोला सिंह, निदेशक (वित्त) एन.के. अग्रवाल ने समारोह के केंद्र बिन्दुआर.एस. महापात्र का अभिनंदन एवं स्वागत किया तथा पुष्पमाला, स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। विभिन्न विभागों के महाप्रबंधक/विभागाध्यक्ष, श्रमिक संघ के प्रतिनिधिगण एवं अन्य ने पुष्पमाला पहनाकर उनका सम्मान किया। विभागाध्यक्ष (जनसम्पर्क) दीपक कुमार एवं उनकी टीम की ओर से भी स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। सम्मान समारोह के केन्द्र बिन्दु आर.एस. महापात्र ने उपस्थित सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आप सभी ने जो सम्मान हमें दिया है उसके लिये हृदय से धन्यवाद देता हूॅं। मुझे आप सबका पूर्ण सहयोग और स्नेह मुझे मिला जिसके लिये मैं सैदव आप सभी का आभारी रहूॅंगा। उन्होंने सीसीएल टीम की प्रशंसा करते हुए कहा कि कंपनी की बागडोर आप जैसे अनुभवी और योग्य कर्मियों के हाथों में है। उन्होंने नये वर्ष की अग्रीम शुभकानाएं देते हुए कहा कि आप इसी तरह एकजूट होकर अपने दायित्व का जिम्मेदारीपूर्वक निर्वहन करते हुए कंपनी को और आगे उन्नति के शिखर तक ले जाये।

पूर्ण नियंत्रित ब्लास्टिंग विधियों पर प्रस्तुति

रांची :हैदरबाद स्थित कंपनी मेसर्स सिबी माइनिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड ने सीसीएल के कॉन्फ्रेंस हॉल(न्यू. बिल्डिग) प्रबंधन के समक्ष पूर्ण नियंत्रित ब्लास्टिंग विधियों पर प्रस्तुति दी। मेसर्स सिबी माइनिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक श्री सिबी लूकोस के अनुसार, पूर्ण नियंत्रित ब्लास्टिंग में सुरक्षा को ध्यान में रखते हुवे 10 मीटर के करीब ब्लास्टिंग किया जाता है और इस प्रकिर्या में न्यूनतम कंपन होता है।

सीसीएल के निदेशक तकनीकी भोला सिंह, महाप्रबंधक (संचालन) आईसी मेहता, महाप्रबंधक/सीएमडी के तकनिकी सचिव एम.वी. राजिमवाले, निदेशक के सचिव के एस गयवाल, महाप्रबंधक (सुरक्षा एवं बचाव) एस वी मराठे, सभी क्षेत्रों के सुरक्षा अधिकारीगण प्रस्तुति के दौरान उपस्थित थे।

राष्ट्रीय कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम

संवाददाता

रांची : कृषि , पशुपालन एवं सहकारिता विभाग पशुपालन प्रभाग झारखंड सरकार द्वारा राष्ट्रीय कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम 2019-20 के अंतर्गत अब तक कुल 53000 पशुओं का निशुल्क कृत्रिम गर्भाधान एवं बारह अंकों के आधार नंबर वाले टैग से चिन्हितिकरण एवं आइएनएपीएच में निबंधन किया गया है। सभी निबंधित पशुओं का स्थानीय पशु चिकित्सा पदाधिकारी द्वारा स्वास्थ्य जांच कर नकुल स्वास्थ्य पत्र उपलब्ध कराया गया है। जनवरी 2020 से इस कार्यक्रम को झारखंड राज्य के प्रत्येक जिलों में तीन सौ और गावों में भी विस्तारित किया गया है।

रेलवे के सेवानिवृत्ति कर्मचारियों की सभी राशियों का भुगतान किया गया

संवाददाता

रांची :दिनांक 31/12/19 को राँची रेल मंडल पर कार्यरत विविध विभाग के कुल 14 रेल कर्मचारी सेवानिवृत्त हुए , तथा उन्हें सेवानिवृत्ति के पश्चात मिलने वाली सभी राशि का भुगतान किया गया। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) एम एम पंडित ने सेवानिवृत्त रेल कर्मचारियों को शुभकामनाएं दी तथा सेवानिवृत्ति के पश्चात सुखद एवं स्वस्थ जीवन के लिए कामना की । सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों के नाम शंभू बड़ाईक परिचालन विभाग, के सी राव परिचालन विभाग, रामजी प्रसाद इंजीनियरिंग विभाग,जगदीश माँझी इंजीनियरिंग विभाग, श्रीमती लुलका रजक इंजीनियरिंग विभाग, श्रीमती लाली इंजीनियरिंग विभाग, पुकार साह वाणिज्य विभाग, समीमुद्दीन वाणिज्य विभाग, रंजन गुहा नियोगी वाणिज्य विभाग, के के राव वाणिज्य विभाग, एम पी यादव यांत्रिक विभाग, टी नागा राजू यांत्रिक विभाग, श्री बृंदाबन पांडेय यांत्रिक विभाग तथा श्रीमती सुकुरमनी कच्छप मेडिकल विभाग इस अवसर पर मण्डल कार्मिक अधिकारी (इंचार्ज) श्रीनिवास, सहायक कार्मिक अधिकारी मोहम्मद इबरार, सहायक परिचालन प्रबन्धक विभूति नारायण शर्मा, सहायक अभियंता वी के पारिक, सहायक मण्डल वित्त प्रबन्धक टी आर मीना तथा मेंस कॉंग्रेस से चंचल सिंह उपस्थित थे ।

खिलाड़ियो को शुभकामनायें देकर विदा किए-भरत काशी

65 वॉ नेशनल गेम, स्कुल गेम फेडरेशन ऑफ इण्डिया जो 29.12.2019 से 03.01.2020 तक मध्यप्रदेश शिवपुरी में आयोजित हो रही है जिसमें भाग लेने के लिए झारखण्ड के खिलाड़ी अपने कोच के साथ राँची रेल मार्ग से आज दिनांक 27.12.2019 को रवाना हुए। इन खिलाड़ियो को आजसु हटिया विधानसभा प्रभारी भरत काशी ने सहयोग एवं शुभकामनाओ के साथ रांची रेलवेस्टेशन से विदा किऐ। इस मौके पर कोच दीपक मुण्डा, निशिकान्त भगत, टीम मैनेजर विष्णु कुमार, सहित छात्र क्लब कला संस्कृति एवं खेल कुद मंच के संस्थापक अध्यक्ष शिव किशोर शर्मा आदि मौजुद थे।

फसलों के लिये बड़ी आफत हैं टिड्डी दल

एजेंसियां:राजस्थान व गुजरात में टिड्डी दल ने हमला कर फसलों को नुकसान पहुंचाना शुरू कर दिया है। टिड्डी दल का यह हमला इस बार ज्यादा खतरनाक माना जा रहा है, क्योंकि इससे पहले जब 1993 में टिड्डी दल ने फसलों को चौपट किया था तो उस समय अक्टूबर में ठंड की वजह से टिड्डियां मर गई थी, लेकिन इस बार सर्दी का मौसम चरम पर होने के बावजूद टिड्डी दल न केवल सक्रिय है, बल्कि उनका हमला और ज्यादा खतरनाक है।

गुजरात के जिन इलाकों में इन दिनों टिड्डी दल सक्रिय है, उनमें बनासकांठा, साबरकांठा, मेहसाणा, कच्छ और पाटन प्रमुख है। अनुमान है कि इस समय लगभग 5000 हेक्टेयर में बोई गई स-रसों, अरंडी, सौंफ, जीरा, कपास, आलू, गेहूं और रतनजोत जैसी फसलों को टिड्डियां नष्ट कर रही हैं। हमले की गंभीरता को समझते हुए केंद्र सरकार ने 11 अधिकारियों का दल गुजरात भेजा है। दरअसल, भारत के राजस्थान के कुछ शुष्क जिलों में जून 2019 में टिड्डी दल ने हमला किया था। यह टिड्डी दल पाकिस्तान से आया था। शुरू में अधिकारियों को लगा कि यह सामान्य हमला है, जो दो तीन साल में होता रहता है, लेकिन कुछ समय बाद हमले की गंभीरता समझ में आई और केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के वनस्पति संरक्षण, संगरोध एवं संग्रह निदेशालय के अधीन काम कर रहे लोकोस्ट (टिड्डी) वार्निंग ऑर्गनाइजेशन (एलडब्ल्यूओ) को सक्रिय किया गया। 15 दिसंबर 2019 को एलडब्ल्यूओ द्वारा जारी बुलेटिन में दावा किया गया है कि 15 दिसंबर 2019 तक एलडब्ल्यूओ द्वारा 3,10,584 हेक्टेयर इलाके में दवा का छिड़काव किया जा चुका है। एलडब्ल्यूओ से जुड़े एक अधिकारी ने बताया कि 1993 में कितने इलाके में दवा का छिड़काव किया गया, इसका आंकड़ा तो नहीं है, लेकिन इस बार का टिड्डियों का हमला 1993 से अधिक बड़ा है।

जलवायु परिवर्तन है वजह

सर्दी शुरू होने के बावजूद टिड्डियों का कहर क्यों बना हुआ है, इस बारे में भुज के स्थानीय नियंत्रण केंद्र के पौध संरक्षण अधिकारी एएम बारिया ने डाउन टू अर्थ को बताया कि इसकी जांच की जा रही है कि आखिर टिड्डियां अभी सक्रिय क्यों हैं, लेकिन मोटे तौर पर माना जा सकता है कि जलवायु परिवर्तन के कारण जिस तरह मौसम का पैटर्न बदला है, उससे टिड्डियों को गुजरात में ठहरने का अधिक मौका मिल गया है। उन्होंने बताया कि इस बार गुजरात में बारिश की शुरुआत देरी से हुई है, जबकि राजस्थान में जहां टिड्डियां सक्रिय थी, वहां मौसम ठंडा हो गया, जबकि बारिश न होने के कारण गुजरात का मौसम गर्म था, इस कारण ये टिड्डियां गुजरात में प्रवेश कर गई।

उधर, एक अन्य अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि राजस्थान और गुजरात के कुछ इलाकों में पाकिस्तान से टिड्डियां आई थी, लेकिन गुजरात के जिन इलाकों में अब टिड्डियों का हमला हुआ है, वे राजस्थान से आई हैं। ये टिड्डियां अपरिपक्व हैं, जो फसलों को ज्यादा नुकसान पहुंचाती हैं।

2500 आदमी के बराबर खाना खाती है टिड्डियां

दुनिया में टिड्डियों की 10 प्रजातियां सक्रिय हैं, इनमें से चार प्रजातियां भारत में समय-समय पर देखी गई हैं। इनमें से सबसे खतरनाक रेगिस्तानी टिड्डी होती है। इसके अलावा प्रवासी टिड्डियां, बॉम्बे टिड्डी और ट्री (वृक्ष) टिड्डी भी भारत में देखी गई हैं। इस बार जो प्रजाति सक्रिय है, वह रेगिस्तानी टिड्डियां हैं। एक व्यस्क टिड्डी की रफ्तार 12 से 16 किलोमीटर प्रति घंटा बताई गई है। ये टिड्डियां किस कदर नुकसानदायक हो सकती हैं, इस्-ाका अनुमान ऐसा लगाया जा सकता है कि इन टिड्डियों का एक छोटा दल एक दिन में 10 हाथी और 25 ऊंट या 2500 आदमियों के बराबर खाना खा सकता है।

टिड्डी चेतावनी संगठन की स्थापना (एलडब्ल्यूओ) 1946 में की गई थी। संगठन का अनुमान है कि 1926 से 1931 के बीच टिड्डियों के हमले से लगभग 10 करोड़ का नुकसान हुआ, जो 100 साल के दौरान सबसे अधिक है। इसी तरह 1940-46 और 1949-55 के दौरान दो बार टिड्डियों का हमला हुआ और दोनों बार लगभग दो-दो करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। 1959-62 के चक्र में केवल 50 लाख रुपए का नुकसान हुआ,इसके बाद 1978 और 1993 में टिड्डियों का हमला हुआ और 1993 में लगभग 75 लाख रुपए के नुकसान का आकलन किया गया।

फोटो न्यूज

कभी धूप कभी छांव : टैगोर हिल की ये सीढियां यही संदेश दे रही हैं कि जीवन पथ की यात्रा में सुख दुख दोनो ही धूप छांव की तरह मिलते हैं और हमें दोनो को खुले मन से स्वीकार करना चाहिये। छायाः उज्ज्वल

चुपचाप पसरता शहर : रांची कभी सिमटी हुइ छोटी खुबसूरत नगरी थी। राजधानी बनने के बाद चुपके से रांची फैलती गयी और अब इसके वीरान इलाके भी शहर में बदल रहे हैं।

भारत के लिये बहुत आवश्यक है अटल भूजल योजना की सफलता

मोदी सरकार पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिन के मौके पर दो महत्वपूर्ण योजनाओं की शुरुआत कर रही है। ये योजनाएं अटल भूजल और अटल टनल नाम से शुरू की जा रही हैं। केंद्र सरकार ने 6000 करोड़ रुपये इसके लिए आवंटित किए हैं। केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावडेकर के मुताबिक पानी की समस्या से निपटने के लिए अटल भूजल योजना लाई गई है। इस पर 5 साल में 6000 करोड़ रुपये का खर्च होगा। जिसमें से 3000 करोड़ रुपये वर्ल्ड बैंक और 3000 करोड़ रुपये सरकार देगी । इस योजना का लाभ छह राज्यों को मिलेगा। इस योजना में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, हरियाणा, राजस्थान और महाराष्ट्र शामिल हैं। सरकार के मुताबिक इस योजना से 8350 गांवों को लाभ मिलेगा।

अटल टनल योजना?

दूसरी अटल टनल योजना मनाली से लेह तक होगी। इस योजना को 2005 में ही मंजूरी मिली थी. इसके लिए 4000 करोड़ रुपये मंजूर किए गए हैं। कुल 8.8 किलोमीटर लंबी इस योजना का तकरीबन 80 फीसदी काम पूरा हो चुका है। दावा किया गया है कि यह विश्व का सबसे ऊंचा टनल होगा।

मुकेश रंजन

देश में तेजी से गिरते भूजल स्तर को रोकने की दृष्टि से अटल भूजल योजना को महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

लगभग डेढ़ साल बाद आखिरकार अटल भूजल योजना शुरू हो गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 25 दिसंबर 2019 को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिवस के मौके पर इसकी शुरुआत की। ऐसे समय में, जब भारत के इन राज्यों में भूजल स्तर काफी खराब हालात में हैं, यह योजना एक बेहतर प्रयास मानी जा रही है। मोदी सरकार ने मार्च 2018 में 'अटल भूजल योजना' का प्रस्ताव रखा था। जिसे विश्व बैंक की सहायता से 2018-19 से 2022-23 की पांच वर्ष की अवधि में कार्यान्वित किया जाना है। इसका लक्ष्य भूजल का गंभीर संकट झेल रहे सात राज्यों गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में सबकी भागीदारी से भूजल का उचित और टिकाऊ प्रबंधन करना था । परन्तु मंत्रिमंडल की मंजूरी न मिल पाने के कारण यह योजना पिछले डेढ़ साल से अधिक समय से अटकी रही। इस योजना को एक दिन पहले ही 24 दिसंबर 2019 को इसे केंद्रीय मंत्रिमंडल की मंजूरी मिली है। अटल जल योजना के तहत राज्यों में स्थायी भू-जल प्रबंधन के लिए संस्थागत प्रबंधनों को मजबूत बनाया जाएगा। संस्थाओं की क्षमता में वृद्धि की जाएगी। इसके अलावा डाटा विस्तार पर फोकस किया जाएगा, जो जल सुरक्षा संबंधी योजनाओं को तैयार करने में मददगार होगा। भूजल प्रबंधन की उपलब्धियां हासिल करने वाले राज्यों को प्रोत्साहन दिया जाएगा। योजना में कृषि में इस्तेमाल होने वाले पानी के उचित प्रबंधन को भी शामिल किया गया है। इसमें सूक्ष्म सिंचाई, फसल विविधता, अलग विद्युत फीडर जैसे कदम उठाए जाएंगे, ताकि उपलब्ध भू-जल संसाधनों का उचित उपयोग किया जा सके।

सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट के रिसर्चर्स का कहना है कि यह योजना इसलिए सार्थक साबित हो सकती है, क्योंकि इसमें समुदायों के सहयोग लेने पर खास ध्यान दिया गया है।

ध्यान रहे कि देश के कुल सिंचित क्षेत्र में लगभग 65 प्रतिशत और ग्रामीण पेयजल आपूर्ति में लगभग 85 प्रतिशत भूजल का इस्तेमाल किया जाता है। जनसंख्या, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण की बढ़ती हुई मांग के कारण देश के सीमित भू-जल संसाधन खतरे में हैं। अधिकांश क्षेत्रों में व्यापक और अनियंत्रित भू-जल दोहन से इसके स्तर में तेजी से और व्यापक रूप से कमी होने के साथ-साथ भू-जल पृथक्करण ढांचों की निरंतरता में गिरावट आई है। देश के कुछ भागों में भू-जल की उपलब्धता में गिरावट की समस्या को भू-जल की गुणवत्ता में कमी ने और बढ़ा दिया है। अधिक दोहन, अपमिश्रण और इससे जुड़े पर्यावरणीय प्रभावों के कारण भू-जल पर पड़ते दबाव ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा खतरे में पहुंच गई है। इसके लिए आवश्यक सुधारात्मक, उपचारात्मक प्रयास प्राथमिकता के आधार पर किये जाने की जरूरत है।

रिपोर्ट्स बताती हैं कि दुनिया भर में भारत में भूजल का सर्वाधिक दोहन किया जाता है, यहां प्रति वर्ष 230 क्यूबिक किलोमीटर भूजल का उपयोग कर लिया जाता है, जोकि भूजल के वैश्विक उपयोग का लगभग एक चौथाई हिस्सा है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि उत्तर भारत जोकि देश का गेहूं और चावल का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र है, में 5,400 करोड़ क्यूबिक मीटर प्रति वर्ष की दर से भूजल घट रहा है । नीति आयोग द्वारा जारी एक रिपोर्ट ने भी लगातार घटते भूजल के स्तर पर चिंता जताई थी। उसके अनुसार वर्ष 2030 तक देश में भूजल में आ रही यह गिरावट सबसे बड़े संकट का रूप ले लेगी । वहीं 2020 तक दिल्ली, बेंगलुरु, चेन्नई और हैदराबाद सहित 21 शहरों में भूजल लगभग खत्म होने की कगार पर पहुंच जायेगा।

अख़बार पहुंचाने के लिए रोजाना 60 किमी साइकिल चलाते हैं जागिन दा

सिदाम महतो

रांची/बुण्डू : देश -दुनिया में हो रही घटना को जानने के लिए लोग हर सुबह अख़बार का इंतजार करते हैं। मौसम चाहे कैसा भी हो हम अखबार का इंतजार बेसब्री से करते हैं। हमारी इस तलब को पूरा करने वालों में एक समर्पित शख्य है जागिन महतो जो शहर में छपने वाले अख़बार को गांव तक पहुंचाते हैं। इसके लिए रोजाना 60 किलोमीटर साइकिल चलाते हैं।

सोनाहातू प्रखण्ड के लांदुपडीह निवासी जागिन महतो पेशे से किसान हैं। हाड़ कंपाने वाली ठण्ड हो, भीषण गर्मी या झमाझम बारिश, अख़बार लाने के लिए सुबह साढ़े तीन बजे ही उठ जाते हैं। क्षेत्र में जंगली हाथियों का भय भी रहता है। इसके बावजूद वे अंधरे में ही अख़बार लाने बुण्डू निकल जाते हैं। 6 बजे बुण्डू से अखबारों का बण्डल उठाते है। रास्ते में अख़बार बाँटते-बाँटते सोनाहातू पूर्वी के कई गांवों तक अख़बार पहुंचाते हैं। अपने घर पहुंचते-पहुंचते दोपहर एक बज जाते हैं। उसके बाद घर का काम -काज भी देखते हैं। इनकी यह दिनचर्या पिछले 15 साल से है। अख़बार बाँटने के काम में इनको आनंद आता है। वे बताते हैं कि डिजिटल हो रही दुनिया के बावजूद लोग आज भी अख़बार उतनी ही उत्सुकता से खरीदते हैं जितना पहले खरीदते थे।अपने जमाने के वॉलीबाल खिलाडी जागिन महतो वालीबॉल खेला करते थे। और आज भी बिल्कुल चुस्त दुरुस्त हैं।

हृदय रोग और स्ट्रोक से बचाता है मिर्च

राजन कुमार

एक नए अध्ययन के अनुसार, मिर्च का सेवन कई रोगों के खतरे को कम करता है। कई वर्षों से, मिर्च को इसके चिकित्सीय गुणों के लिए जाना जाता है। अब शोधकर्ताओं ने पाया है कि नियमित रूप से मिर्च खाने से हृदय रोग और स्ट्रोक से मृत्यु का खतरा कम हो सकता है।

इटली में एक शोध किया गया, जहां मिर्च एक सामान्य हरी सब्जी में गिना जाता है। 23,000 लोगों के बीच अध्ययन में मृत्यु के जोखिम की गणना की गई, जिनमें से कुछ ने मिर्च खाया और कुछ ने नहीं खाया। इन लोगों के स्वास्थ्य की स्थिति और खाने की आदतों पर आठ वर्षों में नजर रखी गई थी, और शोधकर्ताओं ने पाया कि दिल का दौरा पड़ने से मरने का जोखिम प्रति सप्ताह कम से कम चार बार मिर्च मिर्च खाने वालों में कम था। अमेरिकन कॉलेज ऑफ कार्डियोलॉजी जर्नल में प्रकाशित एक शोध परिणाम के अनुसार, ज्यादतर मौतों में आधी से अधिक की वजह स्ट्रोक होते हैं। इंसुब्रिया विश्वविद्यालय में एक प्रोफेसर ने बताया कि मिर्च के लाभकारी गुणों को इतालवी लोगों के खान पान में मिर्च की उपस्थिति के कारण हीं जांचने का विचार आया था ।

वैसे भारत में पहले से ही हरे मिर्च के बारे में कहा जाता है कि यह आंखों की रोशनी बढाने के साथ ही दर्द सहने की क्षमता भी बढाता है। विदेशों में अब जाकर मिर्च के बारे में शोध हो रहे हैं, पर खुद भारत में विदेशों से आये मिर्च के लाभकारी गुणों को हम भारतीय अच्छी तरह से जानते हैं। हरी मिर्च, स्वाद के साथ ही सेहत के लिए भी गुणों का खजाना है। यह आपके स्वास्थ्य को कई तरह से बेहतर बनाए रखने में मदद करती है।हरी मिर्च कई तरह के पोषक तत्वों जैसे- विटामिन ए, बी6, सी, आयरन, कॉपर, पोटेशियम, प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट से भरपूर होती है। यही नहीं इसमें बीटा कैरोटीन,क्रीप्टोक्सान्थिन, लुटेन - जॅक्सन्थिन आदि स्वास्थ्यवर्धक चीजें मौजूद हैं। मधुमेह होने की स्थिति में भी हरी मिर्च में रक्तचाप का स्तर नियंत्रित रखने के गुण होते हैं। हरी मिर्च में एंटी बैक्टीरियल गुण होते हैं जो किसी भी प्रकार के संक्रमण से शरीर और त्वचा की रक्षा करते हैं। यह त्वचा के लिए एंटी इंफ्लेमेटरी मेडिसिन की तरह काम करती है। हरी मिर्च में भरपूर मात्रा में विटामिन-सी होता है, जो रोगों के लड़ने की क्षमता में वृद्धि कर हमारी प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत बनाता है। हरी मिर्च खाने के बाद आपकी बंद नाक का खुल जाना भी इसी का एक उदाहरण है।

कैंसर से लड़ने और शरीर को सुरक्षित रखने के लिए भी हरी मिर्च फायदेमंद है। इसमें भरपूर मात्रा में एंटी ऑक्सीडेंट्स होते हैं, जो शरीर की आंतरिक सफाई के साथ ही फ्री रेडिकल से बचाकर कैंसर के खतरे को कम करती है।इसके सेवन से फेफड़ों के कैंसर का खतरा भी कम होता है। अतः धूम्रपान का सेवन करने वालों को हरी मिर्च को अपने भोजन में ज्यादा शामिल करना चाहिए, क्योंकि उन्हें फेफड़ों के कैंसर का खतरा सबसे ज्यादा होता है। यहां ये सारी खुबियां ताजे मिर्च में पाये जाते हैं भले वो लाल हों या हरे। सूखे मिर्च में ये सारे तत्व तकरीबन विघटित हो जाते हैं।

E ZONE CARE

● Repair your laptop with 3-month warranty.
info@ezonecare.in, ezonecare.in
Rospa Tower 3RD Floor, Main Road, Ranchi.Ph. 93108 96575, 70047 69511
Mon - Fri 10:30 am - 7:00 pm
SunDAY Closed

98355-32792
98353-48615
PappuTanvir
New **CAR MAKER** MARUTI SUZUKI TATA
Visit for
Denting,Painting, Mechanical & Electrical Works
Harmu By Pass Road, Near Power House Ranchi-834001

मधुमेह ग्रस्त होने से पूर्व मिलेगी चेतावनी

देवाशीष राय

भारतीय शोधकर्ताओं ने एक ऐसी पद्धति खोजी है, जो मधुमेह से ग्रस्त होने से पूर्व उसकी चेतावनी देने में उपयोगी हो सकती है। शोधकर्ताओं ने एक अध्ययन में पता लगाया है कि मधुमेह होने से पूर्व ग्लूकोज की प्रचुर मात्रा प्रोटीन सीरम एलब्युमिन की इकाइयों से जुड़ जाती है। इस जैविक स्थिति का उपयोग मधुमेह से पहले की स्थिति का पता लगाने के लिए बायोमार्कर के रूप में किया जा सकता है।

आमतौर पर मधुमेह की वर्तमान स्थिति का पता लगाने के लिए खाली पेट ग्लूकोज खिलाकर रक्त में शर्करा की सहिष्णुता का परीक्षण किया जाता है। हालांकि, कई मामलों में यह विधि कारगर साबित नहीं होपाती। अध्ययन में प्रोटीन सीरम एल्ब्यूमिन के साथ प्रचुर मात्रा में ग्कूकोसंबद्ध पेप्टाइड पाया गया है, जो मधुमेह से ग्रस्त होने से पूर्व की स्थिति का सही रूप से निदान करने में सहायक हो सकता है। प्रोटीन की अत्यंत छोटी इकाई को पेप्टाइड कहते हैं। जबकि, एल्ब्यूमिन रक्त प्लाज्मा में पाया जाने वाला एक प्रोटीन है, जो स्टेरॉयड, फैटी एसिड व थायरॉयड हार्मोनों को बांधे रखता है और उनके वाहक के रूप में कार्य करता है।

शोधकर्ताओं ने पुणे के एक मधुमेह चिकित्सालय के मरीजों के रक्त के नमूनों का जांच करके ग्लूकोसंबद्ध हीमोग्लोबिन, खाली पेट रक्त शर्करा के स्तर और लिपिड प्रोफाइल का परीक्षण किया है। इन परीक्षणों के परिणामों के आधार पर रक्त के नमूनों को मधुमेह पूर्व और सामान्य स्थिति में विभाजित किया गया है। इसके बाद इन नमूनों से प्रोटीन को पृथक किया गया है और फिर द्रव्यमान स्पेक्ट्रोमिट्री विश्लेषण के जरिये प्रोटीन की विशेषताओं का आकलन किया गया है।

वैज्ञानिकों ने पाया कि रक्त में सीरम एल्ब्यूमिन प्रोटीन के 14 पेप्टाइडों के साथ ग्लूकोज जुड़ सकता है। लेकिन, मधुमेह पूर्व की स्थिति में ग्लूकोज से जुड़े तीन विशिष्ट पेप्टाइडों (के36, के438 एवं के549) को प्रचुर मात्रा में पाया गया है। शोधकर्ताओं का मानना है कि

इस मापदंड का उपयोग सामान्य व्यक्तियों में मधुमेह से पूर्व की स्थिति का आकलन करने के लिए किया जा सकता है। सीएसआईआर-राष्ट्रीय रसायन प्रयोगशाला (एनसीएल) के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित इस पद्धति से संबंधित अध्ययन शोध पत्रिका जर्नल ऑफ प्रोटियोमिक्स में प्रकाशित किया गया है।

शोध टीम के प्रमुख डॉ महेश कुलकर्णी के अनुसार ''मधुमेह पूर्व की स्थिति से पूरी तरह मधुमेह में परिवर्तित होने की वार्षिक दर 5 से 10 प्रतिशत है। अगर सही समय पर मधुमेह की पूर्व स्थिति की पहचान हो जाए तो जीवनशैली में बदलाव करके मधुमेह के खतरे से ग्रस्त आबादी को सामान्य जीवन जीने को मिल सकता है। पारंपरिक रूप से इन पेप्टाइडों का निर्धारण मास स्पेक्ट्रोमिट्री तकनीक से किया जाता है जो प्राय: सामान्य प्रयोगशालाओं में उपलब्ध नहीं होती है। इसीलिए, शोधकर्ता इन पेप्टाइडों के प्रतिकूल एक विशिष्ट मोनोक्लोनल एंटीबॉडी विकसित करने और उपयोगकर्ताओं के अनुकूल प्रतिरक्षा प्रणाली विकसित करने पर भी विचार कर रहे हैं। भारत में करीब सात करोड़ लोग मधुमेह से पीड़ित हैं और इसके मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में समय रहते इस बीमारी से प्रभावित होने की चेतावनी मिल जाए तो उपयुक्त जीवनशैली अपनाकर इसके दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है।

मेकॉन के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने सभी को दी नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

रांची : मेकोन के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक अतुल भट्ट ने नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें देते हुये कहा कि इस साल मेकॉन अपने हितधारकों के साथ संबंधों को और मजबूती प्रदान करेगा, जिससे मेकॉन की सफलता व समृद्धि की यात्रा में ऊर्जा मिलेगी । हमारे हितधारकों व ग्राहकों की विभिन्न जरूरतों को पूरा करने के लिए शीघ्र समाधान व गुणवत्ता पर हम काम करते रहेंगे । हम हमारे ग्राहकों व कर्मचारियों के मूल्यों व सहभागिता से और आगे बढ़ने की सतत कोशिश करते रहेंगे। नए साल पर नई ऊर्जा के साथ हम देश हित मे योगदान देने के लिए संकल्पित है।

अखबार के स्वामी सन कम्युनिकेशन के लिये प्रकाशक मनोरंजन सिंह द्वारा प्रकाशित तथा मेसर्स डी. बी. कॉर्प लिमिटेड,प्लॉट नं535 एवं 1272 ललगुटवा पुलिस स्टेशन, रातू, रांची (झारखंड) से मुद्रित और सन कम्युनिकेशन,अपोजिट कब्रिस्तान गेट नं.-2, टीवीएस गली, रातू रोड, रांची-834001 (झारखंड) से प्रकाशित। संपादकः एम.के.शर्मा * (पी.आर.बी. अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये उत्तरदायी)आर.एन.आइ. पंजीयन क्रमांक : JHAHIN/2019/78094, email:greenrevolt2019@gmail.com. ☎ 0651-2283018, 8539978825, 8825374626. समस्त विवाद रांची न्यायालय के अधीन होंगे।